आपातकाल में सृजन फुलवारी

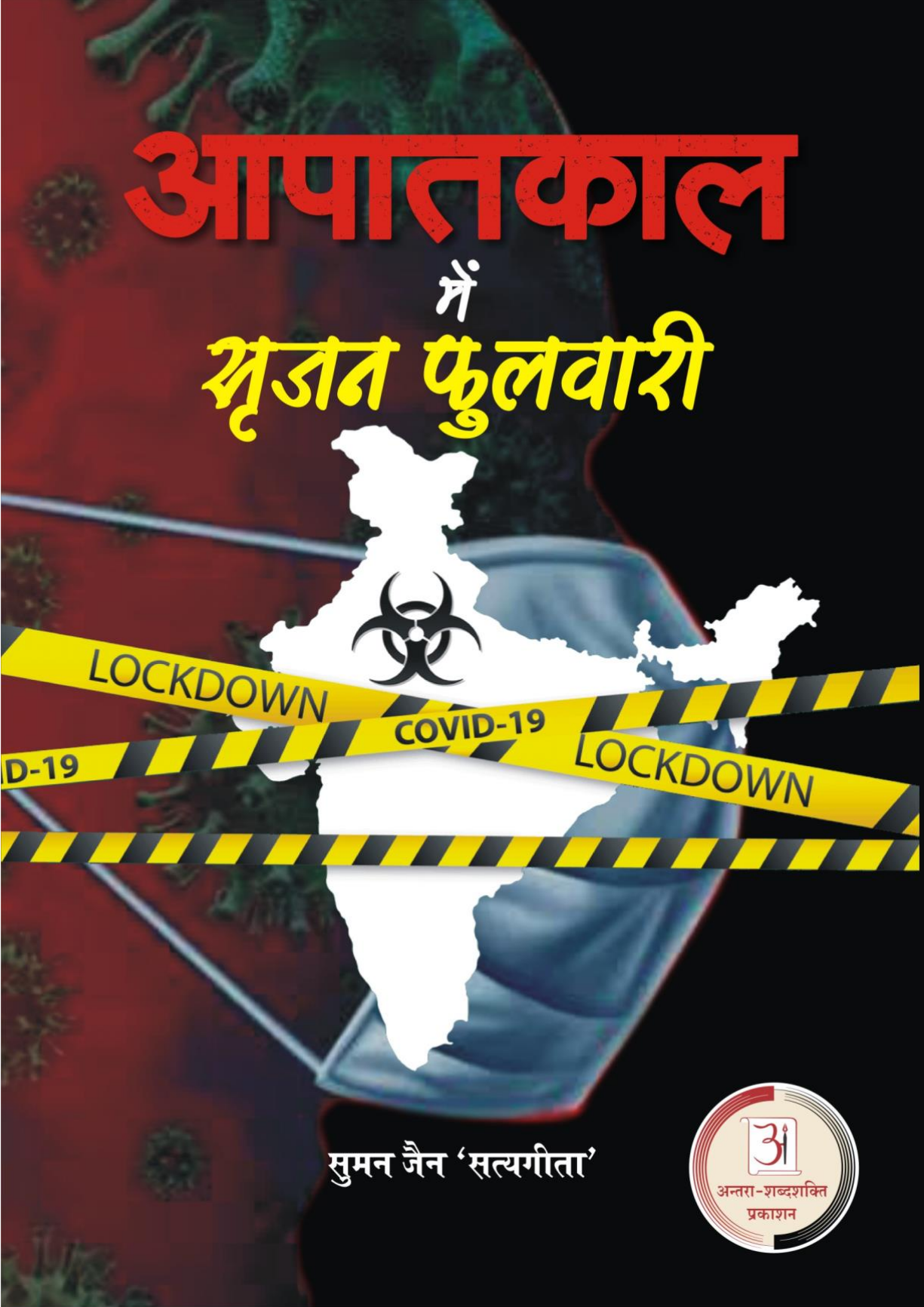

सुमन जैन 'सत्यगीता'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सुमन जैन 'सत्यगीता'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-155-8

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, सुमन जैन 'सत्यगीता'

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY SUMAN JAIN 'SATYAGEETA'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	मेरी कविताओं का सार	6
2.	काश कि तुम सागर होते	7
3.	मेरे जाने के बाद	8
4.	मेरे भीतर की नदी की नीर	9
5.	आओ चले मौन की ओर	10
6.	नारी हुए बिना	11
7.	प्रेम का उत्सव	12
8.	प्रेम ही शेष रहेगा	13
9.	शून्यता ही सम्पूर्णता	14
10.	प्रेम	15
11.	आओ हम इंसान बने	16
12.	विरहन के हृदय की पीर	17
13.	जिंदगी	18
14.	मुश्किल है	19
15.	याद आता है	20
16.	अच्छी नहीं	21

मेरी कविताओं का सार

मैं
लिखती हूँ अपनी हर कविता को
आखिरी कविता की तरह
जीती हूँ प्रत्येक शब्द को
अंतिम स्वांस की भाँति
जो जीवित रखते हैं उस अहसास को
जिनसे मिलकर बना है मेरा वजूद
मेरा वजूद मेरी देह नहीं
मेरी आत्मा है
हाँ!
मैं करना चाहती हूँ
अपनी कविताओं में निर्मल प्रेम की प्राणप्रतिष्ठा
मैं जर्रा-जर्रा बंट जाना चाहती हूँ
समस्त ब्रह्माण्ड में
मिला देना चाहती हूँ पंचतत्व को पंचतत्व में
इन साँसों के रहते-रहते
मेरा और मेरी कविताओं का बस,
इतना सा सार है!

काश कि तुम सागर होते

काश कि तुम सागर होते
और
मुझें भी बहने देते
स्वच्छंद नदी सा
तो
निश्चय ही सदैव
मैं भी बहती रहती
दो किनारों के बीच
न लाँघती कभी भी
मर्यादा अपनी
और एक दिन
आ मिलती तुममें ही
विलीन कर देती स्वयं को
तुम्हारे आगोश में
अपने अस्तित्व को मिटाकर
अफ़सोस..
तुम स्वयं सागर तो हो जाना चाहते थे
लेकिन तुमने मुझें
न बहने दिया स्वच्छंद नदी सा

इसलिए शायद हमारा प्रेम भी
ताउम्र सड़ता रहा किसी पोखर की तरह!

मेरे जाने के बाद

मेरे जाने के बाद
मेरी सारी रचनाओं में से
हटा देना तुम मेरे नाम को
मिटा देना वो सारे चिन्ह
जिनमें शेष रह जाऊँगी मैं थोडा-थोडा

लेकिन हाँ!
तुम जीवित रखना उन रचनाओं को
प्रसारित करना
भाव को, प्यार को, उस आस्था को
जो मेरी नहीं,
अपितु इस समस्त सृष्टि की ही देन है

किस दीपक ने कितना उजाला दिया
कौन याद रखता है
जरूरी है उजास का बचे रहना
नाम कब और कितने दिन शेष रहता है
शेष रहती है भावनाएं
जो इंसानियत को जीवित रखती है

इंसानियत का जीवन्त रहना ही मेरा शेष रहना होगा
मेरी समस्त रचनाएं अब तुम्हारी धरोहर है

मेरे भीतर की नदी की नीर

कविता लिखते-लिखते कभी-कभी
मैं स्वयं भी हो जाती हूँ इक नदी सी
पहाड़ों और चट्टानों का सीना चीर
बहती हूँ अनवरत
तीव्र वेग से
अपने सागर से मिलने के लिये

मेरी कविता के शब्द
कब नदी के नीर में
परिवर्तित होते हैं
कुछ पता ही नहीं चलता
मेरी डायरी के पन्नों पर
आजकल, शब्द नहीं
बहता है मेरे भीतर की नदी का नीर

आओ चले मौन की ओर

तुम्हारे शब्द
मेरे मन से रति करते हैं
अनुभव होता है वह अपार सुख
जहाँ सभी चरम सुख की परिभाषाएं
खो बैठती हैं अपने-अपने
चिरस्थायी स्वरूप को

देह सुख से भिन्न
आत्मसुख को उपलब्ध होती है
मेरी सूरत
ऐसी स्थिति में
गौण हो जाती है
किसी दूसरे की उपस्थिति

शब्दों की अलौकिक ऊर्जा का संवाद
आरम्भ होता है जहाँ से
वहाँ से, छूटने लगते हैं
जनम-जनम के सुख को आभासित करने वाले मिथक..
सच तो यही है कि शब्दों से ही जुड़ी है
नवीन यात्रा मौन की,..

आओ चले मौन की ओर

नारी हुए बिना

नारी हुए बिना
नारी को जानना असम्भव है
नारी की हँसी, उसका रुदन
उसकी घुटन
यहाँ तक की
उसकी मुखरता को
चाहकर भी
समझ नहीं सकता कोई भी पुरुष
उसके मन के कितने ही दरवाजे और खिड़कियाँ
आज भी बंद है
सदियों से ज्यों के त्यों

जानते हो?
आज भी नारी
उन दरवाजों और खिड़कियों के उस पार ही है
और पुरुष
सदा से इस पार

प्रेम का उत्सव

प्रेम देह की वर्जना से मुक्त
गाया गया वो गीत है
जो प्रस्फुटित होता है स्वतः ही आत्मा के स्त्रोत से
मात्र एक बूँद से करता है शीतल
जनम-जनम की आतप्त
रूह को क्षण भर में
देह केवल एक पड़ाव मात्र है
इस पड़ाव पर ठहरे हुए लोग
कभी भी उपलब्ध नहीं होते प्रेम को
प्रेम को उपलब्ध होने के लिये
गिरानी पड़ती है यह दीवार देह की
या यूँ कहो कि
प्रेम को स्पर्श करते ही
विलुप्त होने लगती है देह स्वयं ही
क्योंकि
जहाँ प्रेम होता है वहाँ
प्रेम के अतिरिक्त है सब शून्य ही
और जहाँ शून्य है
वहीं प्रेम का उत्सव है

आओ प्रेम का उत्सव मनाएं..!

प्रेम ही शेष रहेगा

किसी के हाथ में खंजर है
किसी के हाथ में पत्थर
किसी के हाथ में दनदनाती बन्दूकें
तो कोई जैविक हथियार से
धाराशाई कर देना चाहता है
दुनियां के तमाम मुल्क
लेकिन मेरे पास कुछ प्रेम पत्र है
जिनके प्रत्येक शब्द के बलबूते
मैं जीत लेना चाहती हूँ तमाम सृष्टि को

मैं आश्वस्त हूँ
अपनी जीत को लेकर,पूर्णतया
मैं जानती हूँ कि जीत मेरी ही होगी
क्योंकि
यह जीत मेरी नहीं
अपितु है प्रेम की ही
जब कुछ भी नहीं था
तब प्रेम था
और
जब कुछ भी नहीं होगा
तब भी प्रेम ही शेष रहेगा..

शून्यता ही सम्पूर्णता

प्रेम करना कुछ यूँ है कि
जैसे स्वयं को भरपूर जी लेना
दरअसल
प्रेम करना ही स्वयं को जीने की कला है
लेकिन मात्र वह प्रेम ही अमृत बन झरता है
जहाँ कामना का विष न घुला हो
प्रेम में होना अहोभाव से भर जाना है
जब हम प्रेम में होते हैं तो झंकृत हो उठता है
मन वीणा का प्रत्येक तार
एक प्रेम ही सक्षम है
जहाँ हम थिर रूप से रह पाते हैं प्रेम समाधि में
लौटा लाते हैं स्वयं को स्वयं के पास
वितरित कर पाते हैं स्वयं को
सम्पूर्णता के साथ सृष्टि के प्रत्येक कण में
विसर्जित कर पाते हैं अहमता, ममता और कलुषता को
बिना किसी भी प्रयास के..
सच तो यह है कि एक प्रेम ही है
जहां स्वयं के सम्पूर्ण वितरण के पश्चात भी
हम बचे रहते हैं सम्पूर्ण
क्योंकि यहाँ
शून्यता ही सम्पूर्णता है...!

प्रेम

प्रेम
इतना भी आसान नहीं है बाबू
जितनी सहजता से तुम कह गए कि तुम्हें मुझसे प्रेम है!!

प्रेम को जानने के लिए कबीर होना पड़ता है,
मीरा, तुलसी और रैदास होना पड़ता है
लोग, न जाने कितने ही
शास्त्र, वेद, पुराण और कुरान घोलकर पी गये
लेकिन, अफ़सोस! वो नही जान पाए प्रेम के मर्म को
रस से अनजान गुठली के लिये लड़ते देखा है उनको
हड्डियों सा चूसते रहते हैं वो ग्रन्थों को,
कोसते रहते हैं एक दूसरे को धर्म के नाम पर
उस धर्म के नाम पर..जहाँ प्रेम नहीं, करुणा नहीं
हाँ बाबू!
इतना भी आसान नहीं है यह प्रेम
पूरी जिंदगी खर्च की है कबीर जैसे सन्तों ने
तब जाकर इस अढ़ाई आखर की बात की
और, तुमने मुझें इतनी सहजता से कह दिया
कि तुम्हें मुझसे प्रेम है!!!

सोचना जरा! यह प्रेम है या फिर कुछ और....

आओ हम इंसान बने

न जाने
इस मन पर
जमी है कितनी ही परतें
जो धूमिल कर रही है हमारे किरदार को
जिनके नीचे दबकर
भूल बैठे हैं हम निजस्वरूप को
आओ! इस कोरोना काल में
आइसोलेशन के दौरान
हताश होने की बजाए
हम स्वच्छ करें अपने मन को
हटा दें वो सभी परतें
जिनके वशीभूत हुए
हम भूल बैठे हैं मानवता को
क्योंकि यह कोरोना कुछ और नहीं
प्रश्नचिन्ह है हमारी मानवता पर

विरहन के हृदय की पीर

अबकि सावन नहीं बरसा
जानते हो क्यों?
क्योंकि
सहेजकर रख लिया है मैंने सावन को
अपनी आकुल-व्याकुल आंखों में

जिस दिन तुम्हारा दर्शन होगा
उस दिन
बरसेंगे
उमड़-घुमड़ कर मन के बादल
गाएंगे गीत मिलन के

प्रिय!
यह सावन कुछ और नहीं
विरहन के हृदय की पीर ही है....।

जिंदगी

जिंदगी इक सजा हमेशा से।
मुझसे करती जफ़ा हमेशा से।।

नाम देकर गज़ल,मगर हमने;
दर्द अपना पढ़ा हमेशा से।

जुर्म देखा लगा कि कह दूं मैं,
मौन लेकिन रहा हमेशा से।।

बाद मरने किसी के कहते हैं;
आदमी था भला हमेशा से।

साथ फेरे लिये नहीं,फिर भी;
प्यार तुझसे किया हमेशा से।

आदमी की यही रही फितरत,
खुद को समझे ख़ुदा हमेशा से।

जीतता अंत में सदा सच ही,
झूठ माना बिका हमेशा से।

ग़म अगर हो "सुमन" गज़ल कहना,
है यही इक दवा हमेशा से।

मुश्किल है

सूरत तेरी यार भुलाना मुश्किल है।
इस धरती से चाँद छिपाना मुश्किल है।।

है मुमकिन मानव बन जाये देव कभी,
पर, उसको इंसान बनाना मुश्किल है।

सावन में भी झरता हो पतझर जिस पर
उस सहरा की प्यास बुझाना मुश्किल है।

सूख गए हों आँसू तक जिन आंखों से;
उन आँखों को ख़्वाब दिखाना मुश्किल है।

जिन यादों में रात ढली तारे गिन-गिन,
उन यादों से प्यार मिटाना मुश्किल है।

लौट गई बारात कभी जिस दुल्हन की,
उस दुल्हन में आस जगाना मुश्किल है।

खुद रहकर भूखे तुझकोभर पेट दिया
उस माँ का हर कर्ज चुकाना है मुश्किल

रोक सकेगा "सुमन" जमाना क्या तुझको,
इस नदिया पे बांध बनाना मुश्किल है।

याद आता है

रोज चुपके पाँव आना याद आता है तिरा।
हाथ से आंखें छिपाना याद आता है तिरा।।

उस फ़लक़ का चाँद कहते, चाँदनी कहते कभी,
जान कह अपनी बुलाना याद आता है तिरा।

रोज़ मिलने की नई तरकीब तेरी क्या कहूँ,
बिन बुलाए घर पे आना याद आता है तिरा।

गीत कितने प्यार के हमने लिखे थे जो कभी,
साथ मेरे गुनगुनाना याद आता है तिरा।

ख़्वाब कितने ही सँजोये साथ जीने मरने के;
प्यार की कसमे उठाना याद आता है तिरा।

लब मिरे रुखसार पे रख चूम लेते अश्कों को
रोती आँखों को हँसाना याद आता है तिरा।

पीठ पर अक्सर हमारी तुम लिखा करते "सुमन",
उंगलियां रह रह फिराना याद आता है तिरा।

अच्छी नहीं

बेवफा से आशिकी अच्छी नहीं।
जीते जी यूँ ख़ुदकुशी अच्छी नहीं।।

याद रखना जिंदगी में ये सबब;
दिलजलों से दुश्मनी अच्छी नहीं।

ठेस दिल पर जब लगी कहने लगे;
हर किसी से दोस्ती अच्छी नहीं।

ग़मज़दा जब बेसबब होने लगे;
दिल कहे ये जिंदगी अच्छी नहीं।

हर किसी को कर रहें सजदा सभी;
इस तरह की बन्दगी अच्छी नहीं।

मुस्कुराना सीख लो दिल से "सुमन"
बेवज़ह संजीदगी अच्छी नहीं।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

सुमन जैन 'सत्यगीता'

१६ इ, विधा नगर, हिसार

Email- awazmanch@gmail.com

Mobile - 8708606254

कहतें हैं कि शब्द मात्र शब्द नहीं होते अपितु शब्दब्रह्म होते हैं। इनमें अपार शक्ति निहित रहती है। ये शब्द तब और भी अधिक प्रभावशाली सिद्ध होते हैं जब किसी कविता, गीत, गजल आदि के रूप में होते हैं क्योंकि कविता को आत्मा का गीत कहा गया है।आज के इस मौजूदा आपातकाल की परिस्थिति में प्रत्येक रचनाकार का दायित्व बनता है कि वह अपनी इस रचनाधर्मिता को सकारात्मक कार्य में लगाये। मैंने भी प्रभु कृपा से इस आपातकाल में जब चहुँ ओर गहन तम है अपनी रचनाओं के छोटे-छोटे दीपों से स्वयं के एवं दूसरों के जीवन में प्रकाश भरने एवं सकारात्मक विचारों का प्रसार कर अपना दायित्व निभाने का यथासम्भव प्रयास किया।

अन्तराशब्दशक्ति एक ऐसा पटल है जो साहित्य के क्षेत्र में नित नए एवं सकारात्मक आयाम देने में सदैव तत्पर रहता है। राष्ट्र एवं समाज के हित का चिंतन कर सभी रचनाकारों को समय-समय पर प्रोत्साहित भी करता है। इस आपातकाल में भी सभी रचनाकारों को रचना प्रकाशित करवाने का यह सुनहरा अवसर देकर सराहनीय कदम उठाया है। मैं अपनी ओर से अन्तराशब्दशक्ति को हृदय से अभिवादन एवं शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ कि वह इसी तरह से साहित्य क्षेत्र में नित नए आयाम स्थापित कर, राष्ट्र एवं समाज के कल्याण में संलग्न रहे।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-155-8

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/